

(भारत भावना)

जूठे जग के सपने सारे, जूठी मन की सब आशायें;  
तन-ज्वन-यौवन अस्थिर है, क्षण-भंगुर पल में मुरझायें।  
सम्राट मछाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या?  
अशरझ मृत काया में दर्शित, निज ज्वन डाल सकेगा क्या?  
संसार मछा दुःखसागर के, प्रलु दुःखमय सुख आभासों में;  
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनि प्रासादों में।  
मैं अकेली अकेल लिये, अकेल लिये सब डी आते;  
तन धन को साथी समझ था, पर ये भी छोड़ चले जाते।  
मेरे न हुआ ये, मैं इनसे, अति भिन्न अजड़ निरावा हूँ;  
निज में पर से अन्यत्व लिये निज सम रस पीने वाला हूँ,  
जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मछंगा ज्वन घुल जाता;  
अत्यन्त अशुचि जड काया से, इस चेतन का कैसा नाता।  
दिन रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता;  
मानस वाणी और काया से, आसव का द्वार खुला रहता।  
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, जुलसा है मेरा अंतस्तल;  
शीतल समकित किरणों कूटें, संवर से जागे अंतर्बल।  
झिर तप की शोधक वक्ति जगे, कर्मों की कडियां टूट पड़ें;  
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्जर कूट पड़ें।  
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा;  
निज लोक हमारा वासा हो, शोकांत बनें झिर हमको क्या।  
जागे मम दुर्बल बोधि प्रभो ! दुर्नय-तम सत्वर टल जावें;  
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊँ, मद्-मत्सर-मोह विनश जावें।  
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी;  
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।